07-08-2020

Date ___/___/___
Page ______

आर्थिक भूगोल का अर्थ, विषय क्षेत्र एवं विकास

आर्थिक भूगोल का अर्थ - आर्थिक भूगोल प्रत्यक्षतः मानव भूगोल की एक शाखा है जिसके अन्तर्गत भूतल पर मानव की आर्थिक क्रियाओं की क्षेत्रीय विविधताओं, विशेषताओं, स्थानिक प्रतिरूपों तथा पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है।

दूसरे शब्दों में आर्थिक भूगोल में आर्थिक कार्यों के वितरण के प्रतिरूपों, उनके कारकों तथा प्रक्रियाओं का अध्ययन होता है।

समस्त पृथ्वी तल पर प्राकृतिक संसाधनों का क्यों, कहां तथा कैसे उपयोग होता है तथा उसकी परिणति किस प्रकार की है, इस बात का विश्लेषणात्मक अध्ययन ही आर्थिक भूगोल का मूल मंत्र कहा जा सकता है।

समस्त जीवों में मानव ही एक महत्वाकांक्षी एवं बुद्धिमान प्राणी है। उसकी आवश्यकतायें असीमित हैं, जिनकी पूर्ति हेतु वह सतत् प्रयत्नशील रहता है। वह अनेक प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन, उपभोग एवं विनिमय करता है। आर्थिक भूगोल मानव की इन्हीं आर्थिक क्रियाओं - उत्पादन, उपभोग एवं विनिमय का अध्ययन है।

आर्थिक भूगोल की परिभाषा -

× प्रो० आर० एन० ब्राउन के शब्दों में - "आर्थिक भूगोल वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत मानव की आर्थिक क्रियाओं पर पड़ने वाले प्राकृतिक वातावरण के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।"

× प्रो० हार्टिंगटन के अनुसार - "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत उन सभी प्रकार के पदार्थों, साधनों, क्रियाओं, रीति-रिवाजों, मानव शक्तियों तथा मानव योग्यताओं का विवरण आता है जो जीवन जीविकोपार्जन में सहायक होते हैं।"

× गोट्ज के अनुसार - "आर्थिक भूगोल विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की उन विशेषताओं का वैज्ञानिक विवेचन करता है, जिनका वस्तुओं के उत्पादन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।"

× अलेक्जेन्डर के शब्दों में - "आर्थिक भूगोल भूतल पर सम्पत्ति का उत्पादन, विनिमय और उपभोग से सम्बन्धित मानवीय कार्यकलाप की क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन है।"

आर० ई० मर्फी के अनुसार- "आर्थिक भूगोल मानव के जीवन यापन की विधियों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर मिलने वाली समानता एवं विषमता का अध्ययन करता है।"

सी० एफ० जोन्स के अनुसार- "आर्थिक भूगोल उत्पादक व्यवसायों का अध्ययन करता है। कुछ प्रदेश क्यों विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन तथा निर्यात में आगे हैं तथा कुछ अन्य प्रदेश इन वस्तुओं के आयात एवं उपभोग में प्रमुख हैं, यह इस बात का विवेचना करता है।"

अलेक्जेन्डर ने आर्थिक भूगोल को "पृथ्वी तल पर सम्पत्ति का उत्पादन, विनिमय और उपभोग से सम्बन्धित मानव कार्य-कलाप की क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन आर्थिक भूगोल है।"

(6) आधुनिक काल- आधुनिक काल में उद्योग के क्षेत्र में तीव्र प्रगति हुई और आर्थिक विकास के कार्य एकजगह तेजी से होने लगे। आर्थिक क्षेत्र में यन्त्रीकरण के एवं तकनीकी कुशलता का अत्यधिक समावेश हुआ। परिवहन व संचार में अतिशय वृद्धि हुई। फलतः प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग, संरक्षण एवं औद्योगिकरण से सम्बन्धित जटिल समस्यायें उत्पन्न हुई। अनेक समस्याओं के निराकरण के लिए विस्तृत रूप से अध्ययन एवं खोजें प्रारम्भ हुआ। मानव के जीवन स्तर में भी परिवर्तन हुआ। परिणामतः आर्थिक भूगोल के अध्ययन में भी व्यापकता आयी और आर्थिक भूगोल ने अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया।

आर्थिक लाभ के कारण आर्थिक कार्यों का वैश्वीकरण होने लगा है जिससे वर्तमान समय में अनेक आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक समस्याएं जन्म लेने लगी हैं। आर्थिक विकास प्राकृतिक परिवेश को भी प्रभावित करने लगा है, जिसके कारण पर्यावरण अवनयन मानव के विकास में अवरोध बन सकता है। फलतः पारिस्थितिकी संरक्षण आर्थिक विकास को नियंत्रित कर सकता है। इन नये आयामों के कारण आर्थिक भूगोल के अध्ययन में अनेक नये पक्ष जुड़ गये हैं।

फर्नीचर, कपास से कपड़ा आदि बनाया जाता है,

iii- तृतीयक उत्पादक – इस प्रकार के उत्पादन में किसी वस्तु विशेष से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता है बल्कि प्राथमिक एवं द्वितीयक उत्पादन के कार्यों में इनकी सहभागिता होती है इसके अन्तर्गत उन सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं की सेवायें सम्मिलित की जाती हैं, जो उत्पादन प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार से सहायक होती हैं,

विनिमय – वस्तुओं का विनिमय स्थानान्तरण तथा अधिकार परिवर्तन द्वारा होता है, स्थान तथा अधिकार परिवर्तन के कारण वस्तुओं के मूल में वृद्धि होती है, इसे दो भागों में बांटा जा सकता है

(अ) वितरण (ब) व्यापार

वितरण वह विनिमय है जिसमें वस्तुएं तथा सेवाएं एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जायी जाती हैं, जिससे उनकी मूल्य वृद्धि होती है। यातायात एवं परिवहन इस प्रकार के कार्य हैं। व्यापार वह विनिमय है जिससे किसी वस्तु का अधिकार परिवर्तन होता है।

उपभोग – वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग आर्थिक क्रिया-क्रम की अन्तिम अवस्था होती है। उपभोग का सीधा सम्बन्ध उत्पादन तथा विनिमय प्रक्रियाओं से होता है क्यों कि इसी से किसी वस्तु की मांग बढ़ती है तथा उसके उत्पादन और विनिमय को प्रोत्साहन मिलता है।

आर्थिक क्रियाओं द्वारा आर्थिक भू-दृश्य का जन्म होता है अतः आर्थिक क्रियाओं का स्थानिक संगठन, आर्थिक विकास स्तर, आर्थिक नीतियां, आर्थिक विकास की योजनायें एवं नियोजन भी आर्थिक भूगोल के विषय क्षेत्र में आते हैं। इसके अन्तर्गत सभी प्रकार के संसाधन कृषि, उद्योग, वाणिज्य, व्यापार, परिवहन, संचार तथा विविध सेवाकार्य का अध्ययन, भू-पृष्ठ पर पायी जाने वाली क्षेत्रीय विभिन्नताओं की व्याख्या करने के दृष्टिकोण से किया जाता है। जिसमें संसाधन भूगोल, कृषि भूगोल, औद्योगिक भूगोल, परिवहन भूगोल, विपणन भूगोल आदि विशेष रूप से शामिल हैं।

आर्थिक भूगोल का क्रमिक विकास-

इसके वर्तमान स्वरूप का विकास एवं विषय क्षेत्र का विस्तार

मुख्य रूप से 20वीं शताब्दी में हुआ। विषय क्षेत्र का विकास एवं विस्तार मुख्य रूप से मानव के आर्थिक जीवन के विकास एवं उनकी जटिलताओं पर आधारित है। अध्ययन की दृष्टिकोण से आर्थिक भूगोल को निम्न चारों भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(i) प्रारम्भिक काल – आर्थिक भूगोल का सर्वप्रथम उद्भव वाणिज्य भूगोल के रूप में हुआ। सबसे पहले चिसोल्म ने 1839 में वाणिज्य भूगोल पर एक पुस्तक लिखी। तत्पश्चात 1862 में एन्ड्री की पुस्तक 'Geographie des welthandels' नाम से प्रकाशित हुई। 1882 में जर्मन विद्वान गोट्ज ने सर्वप्रथम आर्थिक भूगोल को वाणिज्य भूगोल से अलग बताया।

गोट्ज के अनुसार – "आर्थिक भूगोल में विश्व के विभिन्न भागों में उन विशेषताओं का वैज्ञानिक विवेचन किया जाता है, जिनका वस्तुओं के उत्पादन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।"

उस समय के लोग निश्चयवादी विचारधारा के अनुयायी थे जिसके अन्तर्गत मानव के कार्यों को प्राकृतिक वातावरण द्वारा निर्धारित माना जाता था, अतः उत्पादन पर विभिन्न विभिन्न प्राकृतिक तत्वों के प्रभाव का विवेचन करना ही आर्थिक भूगोल का मुख्य विषय क्षेत्र बन गया।

(ii) अन्तर्युद्ध काल – इस काल में आर्थिक भूगोल के अध्ययन का विकास तीव्र गति हुआ, क्यों कि जर्मनी और जापान अपने लिए कच्चे माल की प्राप्ति एवं बाजार के लिए विस्तृत क्षेत्रों पर अधिकार जमाने हेतु प्रयत्नशील थे तथा दूसरी ओर उपनिवेशवादी राष्ट्र अमेरिका और ब्रिटेन अपने पूर्वाधिकार की रक्षा के लिए उनके प्रयत्नों को निष्क्रिय करने में संलग्न थे, प्रथम विश्व युद्ध छिड़ने से धीरे-धीरे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में बाधा उत्पन्न हुई और औद्योगिक राष्ट्रों को कच्ची सामग्री हेतु नये स्रोतों की खोज करनी पड़ी।

(iii) युद्धोत्तर काल – काफी समय तक भूगोल को अधिकतर विद्वान मानव एवं वातावरण के सम्बन्धों का अध्ययन करने वाला विषय मानते रहे, जबकि इसके अन्तर्गत प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों पक्ष सम्मिलित हो चुके थे

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि आर्थिक भूगोल जीविकोपार्जन के ढंगों और उनकी समस्याओं एवं आर्थिक क्रियाओं से सम्बन्धित विज्ञान है, जिसमें भूतल के आधारभूत संसाधनों और उनसे सम्बन्धित विज्ञान है, जिसमें मानव क्रियाओं के सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है।

आर्थिक भूगोल का विषय क्षेत्र -

आर्थिक भूगोल के विषय क्षेत्र के सम्बन्ध में भूगोल वेत्ताओं में पर्याप्त मतभेद रहा है। तत्सम्बन्ध में तीन विचारधाराएं प्रचलित हैं -

i. आर्थिक भूगोल मानव की आर्थिक क्रियाओं तथा जीविकोपार्जन के साधनों का अध्ययन है,

ii. आर्थिक भूगोल में मानव के भौतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का अध्ययन होता है जिसका मानव के जीवन तथा कार्यों पर प्रभाव पड़ता है

iii. आर्थिक भूगोल विश्व के विभिन्न भागों में पाये जाने वाले कृषि, खनिज तथा औद्योगिक साधनों के उत्पादन, वितरण, उपभोग, वाणिज्य व्यवसाय तथा परिवहन का अध्ययन है।

उपरोक्त विचारधाराओं से स्पष्ट है कि जितना अधिक मानव की आर्थिक क्रियाओं का विस्तार होगा उतना ही आर्थिक भूगोल का विषय क्षेत्र व्यापक होगा। इस प्रकार प्रमुख रूप से आर्थिक कार्यों के अन्तर्गत उत्पादन, विनिमय, और उपभोग सम्मिलित होगा।

उत्पादन - उत्पादन सम्बन्धी आर्थिक कार्यों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है -

1. प्राथमिक उत्पादन - प्राथमिक उत्पादन में प्राकृतिक तत्वों का सीधा उपयोग किया जाता है, जैसे फसल उगाने के लिए मृदा का उपयोग किया जाता है जैसे- जंगलों से लकड़ी काटना, जल से मछली पकड़ना, खनन क्रिया आदि कार्य प्राथमिक उत्पादन के अन्तर्गत आते हैं।

ii. द्वितीयक उत्पादन - द्वितीयक उत्पादन में किसी प्राकृतिक तत्व का सीधा उपयोग नहीं होता, बल्कि उसके रूप एवं गुण में परिवर्तन करके उसे अधिक उपयोगी बनाया जाता है जिससे उनके मूल्य में वृद्धि होती है जैसे- लौह अयस्क से इस्पात, लकड़ी से